ISSN No. 2394-9996

डॉ. रामकुमार वर्मा एक अध्ययन

प्रा.डॉ. पठाण ए.एम.
(मिल्लीया कला, विज्ञान व व्यवस्थापन
शास्त्र महाविद्यालय, बीड.)

डॉ. रामकुमार वर्मा हिंदी साहित्य जगत् के बहुमुखी प्रतिभा के रचनाकार है। इनका जन्म 15 सितम्बर 1904 ई. को मध्यप्रदेश के सागर जिले के गोपालगंज मुहल्ले में हुआ। पिता श्री. लक्ष्मीप्रसाद वर्मा डिप्टी कलक्टर थे और माता श्रीमती राजरानी देवी धर्म- परायण महिला थी।

डॉ. रामकुमार की आरंभिक शिक्षा रामटेक, नरसिंहपुर तथा जबलपुर में हुई। वे दसवीं कक्षा के छात्र थे उसी समय महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन प्रारंभ किया। इन्होंने आंदोलन में सक्रिय भाग लेकर `गांधीगान` की काव्यक्रांति रची। परिणाम ब्रिटिश सरकार ने इसे जब्त कर लिया तथा रामकुमार को कोंडों की सजा दी गई। आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी.ए. तथा एम.ए. (हिंदी) की परिक्षाएँ उच्च श्रेणी में उत्तीर्ण की वहीं हिंदी - विभाग में प्राध्यापक नियुक्त हो गये। वहीं से सन् 1966 ई. में अध्यक्ष एवं प्रोफोसर के पद से सेवानिवृत्त हो गये।

डॉ. रामकुमार वर्मा सचमुच बहुमुखी कलाकार थे। वे एक साथ कवि, नाटककार, एकांकीकार, साहित्य इतिहास लेखक, समीक्षक, सम्पादक तथा संस्मरण लेखक है। आपने अपने जीवन में लगभग 101 रचनाएँ लिखकर हिंदी साहित्य जगत् को अमर बनाया। 5 अक्टूबर 1990 को डॉ. रामकुमार वर्माजी हम लोगों से सदा-सदा के लिए चले गये। डॉ. रामकुमार वर्मा ने अपने जीवन में विविध पुरस्कार प्राप्त किये। साथ ही साथ विदेश यात्रा के रूप में सोवियत संघ, नेपाल, श्रीलंका, अमेरिका आदि देशों का भ्रमण किया।

डॉ. रामकुमार वर्माजी को सर्व प्रथम यदि हम कवि के रूप में देखतें है तो उनकी राष्ट्रप्रेम से ओतप्रोत पंक्तियाँ निम्नवत् दृष्टिगोचर होती है। यथा-

``जिस भारत की धूल लगी है मेरे तन में,

क्या मै उसको कभी भूल सकता जीवन में।

चाहे घर में रहूँ, रहूँ अथवा मैं वन में,

सेवा करना देश की, यही एक संदेश है।

मैं भारत का हूँ सदा, भारत मेरा देश है।``

डॉ. रामकुमार वर्मा ने अन्य कवियो की भाँति अपने काव्य में परम तत्व को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। रहस्यवाद को प्रतिपादित किया है। उनके मन में प्रिय के प्रति अटूट विश्वास एवं आस्था है। इसी कारण यह परमतत्व को अपरिचित मानने को तैयार नहीं है। कवि विश्वासपूर्ण स्वर में कहता है।

``कोन कहता है कि तुम अज्ञान हो।

मैं तुम्हें पहचान लूँगा दिवस हो कि रात हो।``[1]

डॉ. रामकुमार वर्मा का नाम प्रसादोत्तर कालीन नाटककारों में बड़े गर्व के साथ लिया जाता है। डॉ. रामकुमार वर्मा ने लगभग पच्चीस नाटकों की रचना की है। जिसमें `कौमुदी महोत्सव` से लेकर `कर्मवीर कर्ण आदि समाविष्ट है। भाषा सरल और भावात्मक है। रंगमंच का पूरा ध्यान रखा गया है। वातावरण सृष्टि में लेखक सफल है। डॉ. गुप्त इनके नाटकों की प्रशंसा करते हुए कहते हैं, - ``डॉ. रामकुमार वर्मा हिंदी के ऐसे सजीव प्रेरणादायी नाटककार है जिन्होंने नाट्य साहित्य को जनजीवन के निकट पहुँचाने और सही रूप में समझाने एवं प्रस्तुत करने में अपूर्व सहयोग दिया है।``[2]

हिंदी एकांकी के क्षेत्र में डॉ. रामकुमार वर्मा का नाम बहुत महत्वपूर्ण है। कुछ साहित्यकार हिंदी एकांकी का प्रारंभ भरतेंदु हरिश्चंद्र से मानते है तथा कुछ प्रसाद से किंतु पाश्चात्य टैकनिक का अध्ययन कर नए ढंग से एकांकी को हिंदी एकांकी के क्षेत्र में लाने का श्रेय डॉ. रामकुमार वर्मा को ही है। उनकी एकांकियो से ही हिंदी एकांकी साहित्य में एक नया युग प्रारंभ होता है। उन्होंने लगभग 150 एकांकियों की रचना की है। 1930 में `विश्वमित्र` नामक पत्रिका में `बादल की मृत्यु` उनकी सर्व प्रथम एकांकी प्रकाशित हुई थी।

डॉ. रामकुमार वर्माजी ऐतिहासिक एकांकीकार के रूप में विख्यात है। हिंदी ऐतिहासिक एकांकी के वे सबसे बड़े टेक्नीशियन है। उन्होंने अपनी एकांकियों के माध्यम से तत्कालीन सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक इतिहास को जीता

जागता रूप प्रदान किया है। इतना ही नहीं डॉ. रामकुमार वर्माजी ने कुछ एक एकांकियाँ जीवनीपरक भी लिखी है। साथ ही साथ मनोवैज्ञानिकता के आधार पर आधारित एकांकियो का सृजन किया। डॉ. रामकुमारजी ने एकांकी को हर स्तर पर प्रतिपादित करते हुए हास्य-व्यंग्य की झलक प्रस्तुत की है। इस संबंध में डॉ. सभापति मिश्र का मत है, - ``डॉ. रामकुमार वर्माजी भावना की स्थित के अनुसार सधे हुए हास्य की सृष्टि करते हैं। उनका यह हास्य जीवन के अंतस्तल से प्रकट होता है और पानी के बुदबुदे की भाँति क्षणिक न होकर चिरस्थायी, हो जाता है।``[3]

डॉ. रामकुमार वर्मा का साहित्येतिहास लेखन परंपरा में भी अन्यन्य साधारण महत्व है। वास्तव में सृष्टि की कोई भी वस्तु ऐसी नहीं है जिसका इतिहास से संबंध न हो अत:साहित्य भी इतिहास से अलग नहीं है। साहित्य के इतिहास में हम प्राकृतिक घटनाओं और मानवीय क्रिया व्यापारों के स्थान पर साहित्यिक रचनाओं का अध्ययन ऐतिहासिक दृष्टि से करते है। इस दिशा में डॉ. रामकुमार वर्मा ने सन् 1938 में `हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास` लिखकर एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। उन्होंने साहित्य के वर्ण्य विषय, भाषा, रस, छंद, विशेषता आदि को विभक्त कर तत्कालिन साहित्य का सूक्ष्म विवेचन किया है।

डॉ. वर्मा के इस इतिहास ग्रंथ में सरलता, सुस्पष्टता एवं सहजता होने के कारण इसका विशेष महत्व है। इसी कारण इस ग्रंथ की लगभग पाँच आवृत्तियाँ प्रकाशित हुई है। प्रत्येक आवृत्ति की भूमिका में डॉ. रामकुमार वर्मा ने मनोगत में लिखा है - `` जल्दी ही इस इतिहास के साथ कलाकाल (रीतिकाल) और आधुनिक हिंदी साहित्य सामग्री को जोड़कर `हिंदी साहित्य का संपूर्ण इतिहास` लिखा जायेगा।``[4] किंतु उनकी यह आंतरिक इच्छा पूर्ण नहीं हो सकी।

डॉ. रामकुमार वर्माजी ने समीक्षात्मकता को दृष्टि में रखकर भी कार्य किया है। उनके `कबीर का रहस्यवाद` इस ग्रंथ को विशेष रूप में हम देख सकते है। `कबीर का रहस्यवाद` एक अध्ययनपूर्ण ग्रंथ है। जिसमें उन्होंने कबीर के रहस्यवाद का स्वरूप, विशेषताएँ, रहस्यवाद के विभिन्न पहलुओं का सूक्ष्म एवं गंभीर विवेचन किया है।

विश्व के सृजन की जिज्ञासा से लेकर अब तक न जाने कितने कवियों - लेखकों एवं विद्वानों के दिल से सहस्यवाद की भावना निर्झर की भाँति प्रवाहित रही है। न जाने कितने महानुभवने इस अनुभूति के प्रवाह में अपने आप को प्रवाहित

किया है। संसार के सभी कवि कम अधिक मात्रा से रहस्यवादी रहे है। इन कवियों में कबीर का स्थान सबसे ऊँचा है। कबीर ने स्वानुभूति को अपनी विशेष वाणी में अभिव्यक्त किया है।

डॉ. रामकुमार वर्माजी ने रहस्यवाद पर प्रकाश डालते हुए कहा है, ``रहस्यवाद जीवात्मा की उस अन्तर्हित प्रवृत्ति का प्रकाशन है, जिस में वह दिव्य और अलौकिक शक्ति से अपना शांत और निश्छल संबंध जोड़ना चाहता है। यह संबंध यहाँ तक बढ़ जाता है कि दोनों में कुछ भी अंतर नही रह जाता।``[5]

जैसा - ``जल में कुम्भ, कुम्भ में जल है, बाहिर भीतर पानी।

फुटा कुम्भ जल जलहि समाना, यहु तत कथो गियानी।``

सार रूप में हम कह सकते है कि डॉ. रामकुमार वर्मा हिंदी साहित्य जगत् की एक महान विभूती है। उनका योगदान हिंदी के लिए महत्वपूर्ण ही नही अपितु अत्यंत आवश्यक है। वे हिंदी की विशेष धरोवर तथा उपलब्धि है। हिंदी साहित्य जगत् उनके बिना अधुरा है।

संदर्भ सूची:

(1) डॉ. रामकुमार वर्मा - आकाशगंगा - पृ. 40

(2) रामकुमार गुप्त - आधुनिक हिंदी नाटक और नाटककार - पृ. 203

(3) डॉ. सभापति मिश्र - हिंदी नाटक साहित्य में हास्य व्यंग - पृ.

(4) डॉ. रामकुमार वर्मा - हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - भूमिका

(5) डॉ. रामकुमार वर्मा - कबीर का रहस्यवाद - पृ. 15

☆☆☆